arts and Humanities

E-ISSN No : 2456-5040 | Volume : 11 | Issue : 5 | May 2026

NEP 2020 के माध्यम से नैतिक और चारित्रिक शिक्षा का पुनरावलोकनरू एक अवधारणात्मक दृष्टिकोण

Access Online

Article DOI:
10.5281/zenodo.21239224

Pinky Balar[1], Dr. Lipi Jain[2]

[1] Research Scholar, Jain Vishva Bharati Institute

[2] Assistant Professor, Dept. of Non-violence & Peace, Jain Vishva Bharati Institute

How to Cite:
Pinky Balar & Dr. Lipi Jain (2026), NEP 2020 के माध्यम से नैतिक और चारित्रिक शिक्षा का पुनरावलोकनरू एक अवधारणात्मक दृष्टिकोण, International Educational Applied Scientific & Research Journal (IEASRJ), Vol: 11, Issue: 5, 01-12

ABSTRACT

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 भारतीय शिक्षा प्रणाली में एक परिवर्तनकारी बदलाव का प्रतिनिधित्व करती है, जो शिक्षा के उद्देश्य को पुनर्परिभाषित करते हुए न केवल अकादमिक उत्कृष्टता बल्कि नैतिक और चरित्र विकास को भी शामिल करती है। यह वैचारिक शोधपत्र एनईपी 2020 के ढांचे के भीतर नैतिक और चरित्र शिक्षा के एकीकरण की जांच करता है, इसके दार्शनिक आधारों, शिक्षण पद्धतियों और संस्थागत निहितार्थों पर जोर देता है। धर्म, मानवतावाद और मूल्य–आधारित शिक्षा जैसी भारतीय ज्ञान परंपराओं और नैतिक ढांचों का उपयोग करते हुए, यह अध्ययन इस बात पर प्रकाश डालता है कि एनईपी 2020 किस प्रकार संज्ञानात्मक, भावनात्मक, सामाजिक और नैतिक आयामों को समाहित करते हुए समग्र विकास को बढ़ावा देती है।

यह शोधपत्र आगे पाठ्यक्रम डिजाइन, अनुभवात्मक अधिगम, जीवन कौशल और चिंतनशील अभ्यासों जैसे प्रमुख घटकों की पड़ताल करता है जो शिक्षार्थियों में मूल्यों के समावेश में योगदान करते हैं। यह नैतिक जागरूकता और जिम्मेदार नागरिकता को बढ़ावा देने में शिक्षकों और शैक्षणिक संस्थानों की महत्वपूर्ण भूमिका का भी विश्लेषण करता है। कार्यान्वयन में संरचनात्मक, शिक्षण संबंधी और सामाजिक–सांस्कृतिक चुनौतियों की पहचान करते हुए, यह अध्ययन नवाचार और नीतिगत समर्थन के माध्यम से नैतिक शिक्षा को मजबूत करने के लिए उभरते अवसरों और भविष्य की दिशाओं की रूपरेखा भी प्रस्तुत करता है।

निष्कर्ष बताते हैं कि एनईपी 2020 नैतिक और चरित्र शिक्षा को मुख्यधारा की शिक्षा में एकीकृत करने के लिए एक व्यापक और सांस्कृतिक रूप से आधारित ढांचा प्रदान करता है। पारंपरिक मूल्यों को आधुनिक शैक्षिक पद्धतियों के साथ जोड़कर, यह नीति नैतिक रूप से जिम्मेदार, सामाजिक रूप से जागरूक और सर्वांगीण व्यक्तित्व वाले व्यक्तियों का पोषण करने की क्षमता रखती है, जिससे एक न्यायपूर्ण और मानवीय समाज के निर्माण में योगदान मिलता है।

KEYWORDS: एनईपी 2020, नैतिक शिक्षा, चरित्र शिक्षा, समग्र विकास, मूल्य आधारित शिक्षा

1. परिचय

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 के लागू होने से भारतीय शिक्षा प्रणाली में महत्वपूर्ण परिवर्तन आया है। इस नीति का उद्देश्य समकालीन सामाजिक आवश्यकताओं और वैश्विक विकास के अनुरूप शिक्षा के व्यापक उद्देश्य को पुनर्परिभाषित करना है। पिछली नीतियों के विपरीत, जिनमें मुख्य रूप से अकादमिक उपलब्धि और मानकीकृत शिक्षण परिणामों पर जोर दिया जाता था, एनईपी 2020 अधिक व्यापक और शिक्षार्थी–केंद्रित दृष्टिकोण अपनाती है। यह रटने और खंडित ज्ञान संरचनाओं से आगे बढ़कर समग्र विकास को बढ़ावा देती है, जिसमें बौद्धिक, भावनात्मक, सामाजिक और नैतिक आयाम शामिल हैं। यह परिवर्तन इस बढ़ती मान्यता को उजागर करता है कि शिक्षा का उद्देश्य केवल कुशल श्रमिक तैयार करना ही नहीं, बल्कि ऐसे जिम्मेदार नागरिक तैयार करना भी होना चाहिए जिनमें मजबूत नैतिक मूल्य और नैतिक जागरूकता हो (पढ़ी और बनर्जी, 2023)।

Figure 1: फ्लोचार्टरू NEP 2020 के अंतर्गत नैतिक एवं चरित्र शिक्षा

स्रोतः स्वयं का प्रसंस्करण

Research Paper

Copyright© 2026, IEASRJ. This open-access article is published under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License which permits Share (copy and redistribute the material in any medium or format) and Adapt (remix, transform, and build upon the material) under the Attribution-NonCommercial terms.

भारतीय शिक्षा प्रणाली द्वारा पिछले दशकों में सामना की गई चुनौतियों के आलोक में नई शिक्षा नीति 2020 की पृष्ठभूमि और संदर्भ को समझा जा सकता है। मूल्य अभिविन्यास का अभाव, कठोर पाठ्यक्रम संरचनाएं, सीमित अंतर्विषयक शिक्षा और जीवन कौशल पर अपर्याप्त ध्यान जैसे मुद्दों ने शिक्षा और वास्तविक जीवन में इसके अनुप्रयोग के बीच एक खाई पैदा कर दी है। नई शिक्षा नीति 2020 मूल्य–आधारित शिक्षा, आलोचनात्मक चिंतन, रचनात्मकता और अनुभवात्मक शिक्षा को पाठ्यक्रम में एकीकृत करके इस खाई को पाटने का प्रयास करती है। यह भारत की समृद्ध दार्शनिक विरासत से प्रेरणा लेती है, जहां शिक्षा को परंपरागत रूप से मात्र ज्ञान प्राप्ति के बजाय चरित्र निर्माण और नैतिक विकास के साधन के रूप में देखा जाता रहा है। यह नीति वैश्विक शैक्षिक ढांचों के अनुरूप भी है जो शिक्षार्थियों में नैतिक तर्क, सहानुभूति और सामाजिक जिम्मेदारी के विकास पर जोर देते हैं (परमार, 2026)।

इसके अलावा, नई शिक्षा नीति 2020 एक ऐसी शिक्षा प्रणाली के निर्माण की परिकल्पना करती है जो न केवल अकादमिक उत्कृष्टता बल्कि नैतिक और मानवीय मूल्यों को भी बढ़ावा देती है। यह करुणा, सत्यनिष्ठा, विविधता के प्रति सम्मान और समाज के प्रति कर्तव्य की भावना जैसे गुणों को विकसित करने के महत्व पर बल देती है। यह नीति समग्र विकास प्राप्त करने के लिए भारतीय ज्ञान प्रणालियों, बहुविषयक शिक्षा और मूल्य–आधारित शिक्षा के एकीकरण की वकालत करती है। ऐसा करके, यह शिक्षा की भूमिका को एक परिवर्तनकारी शक्ति के रूप में पुनः स्थापित करने का प्रयास करती है जो व्यक्तियों की बुद्धि और चरित्र दोनों को आकार देती है (परीक और परीक, 2025)। यह दृष्टिकोण इस व्यापक समझ को दर्शाता है कि सतत विकास और सामाजिक सद्भाव तभी प्राप्त किया जा सकता है जब शिक्षा नैतिक रूप से सुदृढ़ और सामाजिक रूप से जिम्मेदार व्यक्तियों का पोषण करे।

समकालीन समाज के संदर्भ में, नैतिक और चरित्र शिक्षा की आवश्यकता अत्यंत महत्वपूर्ण हो गई है। तीव्र तकनीकी प्रगति, वैश्वीकरण और बदलते सामाजिक–सांस्कृतिक परिवेश ने व्यक्तिगत व्यवहार और सामाजिक मूल्यों को काफी हद तक प्रभावित किया है। इन विकासों ने विकास और नवाचार के नए अवसर तो पैदा किए हैं, लेकिन साथ ही नैतिक दुविधाओं, आपसी संबंधों में गिरावट, भौतिकवाद और पारंपरिक मूल्य प्रणालियों के क्षरण जैसी चुनौतियाँ भी खड़ी की हैं। ऐसे परिदृश्य में, शिक्षा को जटिल नैतिक परिस्थितियों से निपटने और सूचित, नैतिक निर्णय लेने में व्यक्तियों का मार्गदर्शन करने में सक्रिय भूमिका निभानी चाहिए।

नैतिक और चरित्र शिक्षा सहानुभूति, ईमानदारी, जिम्मेदारी और दूसरों के प्रति सम्मान जैसे गुणों को बढ़ावा देने के लिए आवश्यक है। ये मूल्य भारत जैसे विविध समाज में सामाजिक सामंजस्य बनाए रखने और शांतिपूर्ण सह–अस्तित्व को बढ़ावा देने के लिए मूलभूत हैं। नैतिक शिक्षा को मुख्यधारा के पाठ्यक्रम में शामिल करके, नई नीति योजना 2020 संज्ञानात्मक विकास और नैतिक विकास के बीच असंतुलन को दूर करने का प्रयास करती है। यह मानती है कि सच्ची शिक्षा बौद्धिक उपलब्धि से परे है और इसमें एक मजबूत नैतिक दिशा–निर्देश का विकास शामिल है जो व्यक्तियों को उनके व्यक्तिगत और व्यावसायिक जीवन में मार्गदर्शन करता है (पढ़ी और बनर्जी, 2023)।

इसके अलावा, चरित्र शिक्षा पर जोर जिम्मेदार नागरिकता के विकास से गहराई से जुड़ा हुआ है। ऐसे युग में जहां व्यक्ति तेजी से विविध दृष्टिकोणों और जटिल वैश्विक मुद्दों के संपर्क में आ रहे हैं, आलोचनात्मक रूप से सोचने और नैतिक रूप से कार्य करने की क्षमता महत्वपूर्ण हो जाती है। चरित्र शिक्षा शिक्षार्थियों को जवाबदेही, नागरिक जिम्मेदारी और व्यापक भलाई के प्रति प्रतिबद्धता की भावना विकसित करने में सक्षम बनाती है। यह उन्हें न्याय, समानता और मानवीय गरिमा के सम्मान जैसे मूल्यों को बढ़ावा देकर समाज में सकारात्मक योगदान देने के लिए भी तैयार करती है (परीक और परीक, 2025)।

इस प्रकार, एनईपी 2020 के ढांचे के माध्यम से नैतिक और चरित्र शिक्षा का पुनरीक्षण समयोचित और आवश्यक दोनों है। यह एक वैचारिक दृष्टिकोण प्रदान करता है जिससे यह समझा जा सकता है कि भारतीय समाज की सांस्कृतिक और दार्शनिक नींव को संरक्षित करते हुए आधुनिक दुनिया की नैतिक और सामाजिक चुनौतियों का समाधान करने के लिए शिक्षा को कैसे पुनर्गठित किया जा सकता है। समग्र और मूल्य–आधारित शिक्षा पर जोर देते हुए, एनईपी 2020 एक परिवर्तनकारी दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है जो ज्ञान को चरित्र के साथ सामंजस्य स्थापित करने का प्रयास करता है, जिससे सर्वांगीण व्यक्तित्वों के विकास और अधिक न्यायपूर्ण और मानवीय समाज के निर्माण में योगदान मिलता है (परमार, 2026)।

1.1 उद्देश्य

1. राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 के अंतर्गत नैतिक एवं चरित्र शिक्षा के वैचारिक ढांचे का अध्ययन करना।
2. भारत में नैतिक शिक्षा के दार्शनिक आधारों का विश्लेषण करना।
3. राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 के अंतर्गत नैतिक एवं चरित्र विकास को बढ़ावा देने के लिए शिक्षण पद्धतियों का विश्लेषण करना।
4. राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 में नैतिक शिक्षा की चुनौतियों, अवसरों और भविष्य के निहितार्थों की पहचान करना।

2. नैतिक एवं चरित्र शिक्षा की अवधारणात्मक समझ

नैतिक एवं चरित्र शिक्षा, विशेष रूप से समकालीन शैक्षिक सुधारों में परिकल्पित समग्र विकास के संदर्भ में, शैक्षिक प्रक्रिया का एक मूलभूत आयाम है। ये अवधारणाएँ अकादमिक ज्ञान के अधिग्रहण से परे जाकर व्यक्ति के व्यक्तित्व के नैतिक, भावनात्मक और सामाजिक पहलुओं को आकार देने पर केंद्रित हैं। नई शैक्षिक नीति 2020 के ढांचे में, नैतिक एवं चरित्र शिक्षा को पृथक विषय नहीं बल्कि व्यापक शैक्षिक अनुभव के अभिन्न अंग के रूप में माना जाता है, जो शिक्षार्थियों के सोचने, व्यवहार करने और समाज में परस्पर क्रिया करने के तरीके को प्रभावित करता है।

नैतिक शिक्षा वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से व्यक्ति नैतिक सिद्धांतों, सामाजिक मानदंडों और सांस्कृतिक मूल्यों द्वारा निर्देशित होकर सही

और गलत की समझ विकसित करते हैं। इसमें नैतिक तर्क, नैतिक निर्णय लेने और जिम्मेदार व्यवहार की क्षमता का पोषण शामिल है। दूसरी ओर, चरित्र शिक्षा ईमानदारी, सत्यनिष्ठा, सहानुभूति, अनुशासन और दूसरों के प्रति सम्मान जैसे व्यक्तिगत गुणों और सद्गुणों के विकास पर जोर देती है। जहाँ नैतिक शिक्षा नैतिक समझ और निर्णय पर अधिक ध्यान केंद्रित करती है, वहीं चरित्र शिक्षा इन मूल्यों को रोजमर्रा की जिंदगी में आत्मसात करने और निरंतर अभ्यास करने से संबंधित है।

वैचारिक दृष्टि से, नैतिक और चरित्र शिक्षा परस्पर जुड़ी हुई और एक दूसरे को सुदृढ़ करने वाली हैं। इनका उद्देश्य ऐसे व्यक्तियों का निर्माण करना है जो न केवल नैतिक सिद्धांतों का ज्ञान रखते हों, बल्कि अपने कार्यों और व्यवहार के माध्यम से इन सिद्धांतों का प्रदर्शन भी करते हों। भारतीय शिक्षा के संदर्भ में, ये विचार दार्शनिक परंपराओं में गहराई से निहित हैं जो शिक्षा को बुद्धि और नैतिक आत्म–विकास दोनों के साधन के रूप में देखती हैं। एनईपी 2020 मूल्य–आधारित शिक्षा और नैतिक रूप से सुदृढ़ व्यक्तियों के निर्माण पर जोर देकर इस दृष्टिकोण को पुनर्जीवित करती है (गिरी, 2025)।

इसके अतिरिक्त, नैतिक और चरित्र शिक्षा को समग्र विकास को बढ़ावा देने के लिए आवश्यक माना जाता है, जहाँ संज्ञानात्मक क्षमताओं का विकास भावनात्मक बुद्धिमत्ता और नैतिक जागरूकता द्वारा पूरक होता है। इसलिए, शिक्षा एक परिवर्तनकारी प्रक्रिया बन जाती है जो शिक्षार्थी की पहचान को आकार देती है, उन्हें समाज के जिम्मेदार और दयालु सदस्य बनने की दिशा में मार्गदर्शन करती है (मिश्रा और पनी, 2025)। कथात्मक शिक्षण विधियों, अनुभवात्मक शिक्षा और चिंतनशील अभ्यासों का एकीकरण शिक्षार्थियों में नैतिक मूल्यों की समझ और आत्मसात को और बढ़ाता है (सोनी और बंसल, 2025)। नैतिक और चरित्र शिक्षा की वैचारिक रूपरेखा को इसके प्रमुख आयामों के माध्यम से समझा जा सकता है, जो सामूहिक रूप से किसी व्यक्ति के नैतिक व्यक्तित्व के निर्माण में योगदान करते हैं।

मूल्य नैतिक और चरित्र निर्माण की शिक्षा की नींव हैं। इनमें ईमानदारी, आदर, उत्तरदायित्व, निष्पक्षता, करुणा और सहिष्णुता जैसे सिद्धांत शामिल हैं। मूल्य मार्गदर्शक मानकों के रूप में कार्य करते हैं जो व्यक्ति के निर्णयों और कार्यों को प्रभावित करते हैं। शिक्षा के संदर्भ में, मूल्यों का समावेश शिक्षार्थियों को उद्देश्य और दिशा की भावना विकसित करने में मदद करता है, जिससे वे अपने व्यक्तिगत लक्ष्यों को सामाजिक कल्याण के साथ संरेखित कर पाते हैं।

नैतिकता में मानवीय आचरण को नियंत्रित करने वाले नैतिक सिद्धांतों की व्यवस्थित समझ शामिल है। नैतिक शिक्षा शिक्षार्थियों को स्थितियों का आलोचनात्मक विश्लेषण करने, अनेक दृष्टिकोणों पर विचार करने और निष्पक्षता और न्याय के आधार पर सूचित निर्णय लेने के लिए प्रोत्साहित करती है। यह नैतिक तर्क में संलग्न होने और व्यक्तिगत और व्यावसायिक दोनों संदर्भों में जटिल नैतिक दुविधाओं से निपटने की क्षमता विकसित करती है। एनईपी 2020 शैक्षिक प्रक्रिया के एक प्रमुख परिणाम के रूप में नैतिक जागरूकता के महत्व पर प्रकाश डालता है, यह सुनिश्चित करते हुए कि शिक्षार्थी वास्तविक दुनिया की चुनौतियों का ईमानदारी से सामना करने के लिए सुसज्जित हों (गिरी, 2025)।

व्यवहार मूल्यों और नैतिक समझ की व्यावहारिक अभिव्यक्ति का प्रतिनिधित्व करता है। यह दर्शाता है कि व्यक्ति विभिन्न स्थितियों में कैसे कार्य करते हैं, यह प्रदर्शित करता है कि नैतिक सिद्धांतों को किस हद तक आत्मसात किया गया है। चरित्र शिक्षा में निरंतर और जिम्मेदार व्यवहार पर विशेष बल दिया जाता है, जिससे शिक्षार्थी मूल्यों के अपने ज्ञान को सार्थक कार्यों में परिवर्तित करने के लिए प्रोत्साहित होते हैं। सकारात्मक व्यवहार विकास शैक्षणिक संस्थानों और समाज में अनुशासन, सहयोग और सामाजिक सद्भाव को बढ़ावा देने के लिए आवश्यक है (मिश्रा और पनी, 2025)।

दृष्टिकोण उन पूर्वधारणाओं या मानसिकता को संदर्भित करते हैं जो व्यक्तियों के विभिन्न परिस्थितियों को समझने और उन पर प्रतिक्रिया करने के तरीके को प्रभावित करती हैं। सहानुभूति, खुलापन, विविधता के प्रति सम्मान और सीखने की तत्परता जैसे दृष्टिकोण नैतिक चरित्र के विकास के लिए महत्वपूर्ण हैं। चिंतनशील सोच और भावनात्मक जुड़ाव को बढ़ावा देने वाली शैक्षिक पद्धतियाँ सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करने में सहायक होती हैं, जो बदले में नैतिक व्यवहार और मूल्य–आधारित निर्णय लेने में सहयोग प्रदान करती हैं। हाल के शैक्षिक विमर्श में सुझाए गए कथात्मक और अनुभवात्मक शिक्षण दृष्टिकोण, शिक्षार्थियों में ऐसे दृष्टिकोण विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं (सोनी और बंसल, 2025)।

निष्कर्षतः, नैतिक और चरित्र शिक्षा की वैचारिक समझ इसके बहुआयामी स्वरूप को उजागर करती है, जिसमें मूल्य, नैतिकता, व्यवहार और दृष्टिकोण शामिल हैं। ये आयाम मिलकर ऐसे व्यक्तियों का निर्माण करते हैं जो न केवल ज्ञानवान हों बल्कि नैतिक रूप से जिम्मेदार और सामाजिक रूप से जागरूक भी हों। इन तत्वों को शैक्षिक ढांचे में एकीकृत करके, एनईपी 2020 एक संतुलित प्रणाली बनाने का प्रयास करती है जो बौद्धिक विकास और नैतिक विकास दोनों को पोषित करती है, जिससे आधुनिक समाज की जटिलताओं का सामना करने में सक्षम सर्वांगीण व्यक्तित्वों के निर्माण में योगदान मिलता है।

3. भारत में नैतिक शिक्षा के दार्शनिक आधार

भारत में नैतिक शिक्षा के दार्शनिक आधार इसकी समृद्ध सांस्कृतिक, आध्यात्मिक और बौद्धिक परंपराओं में गहराई से निहित हैं, जिन्होंने ऐतिहासिक रूप से व्यक्ति के आंतरिक और बाह्य जीवन के सामंजस्यपूर्ण विकास पर बल दिया है। शिक्षा के विशुद्ध उपयोगितावादी दृष्टिकोणों के विपरीत, भारतीय परिप्रेक्ष्य शिक्षा को आत्म–साक्षात्कार, नैतिक परिष्कार और सामाजिक उत्तरदायित्व के साधन के रूप में देखता है। इसलिए, नैतिक शिक्षा को एक सहायक घटक के रूप में नहीं, बल्कि शैक्षिक प्रक्रिया के एक केंद्रीय उद्देश्य के रूप में माना जाता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 इन दार्शनिक आधारों से काफी प्रेरणा लेती है, और पारंपरिक मूल्य प्रणालियों को समकालीन शैक्षिक पद्धतियों के साथ पुनर्जीवित और एकीकृत करने का प्रयास करती है (श्रीवास्तव, 2025)।

भारतीय ज्ञान परंपराएं नैतिक शिक्षा को मानव विकास के अभिन्न अंग के रूप में समझने के लिए एक व्यापक ढांचा प्रदान करती हैं। प्राचीन शिक्षा प्रणालियाँ, जैसे कि गुरुकुल प्रणाली, न केवल बौद्धिक शिक्षा पर बल्कि अनुशासन, विनम्रता, सम्मान और नैतिक आचरण के विकास पर भी बल देती थीं। वेद, उपनिषद, भगवद् गीता और अन्य शास्त्रीय ग्रंथ आत्म–जागरूकता, कर्तव्य, धर्मपरायणता और सत्य की खोज के महत्व को शिक्षा के आवश्यक पहलुओं के रूप में उजागर करते हैं।

ये परंपराएँ ज्ञान के समग्र दृष्टिकोण का समर्थन करती हैं, जहाँ अधिगम नैतिक और आध्यात्मिक विकास से जुड़ा हुआ है। शिक्षा को एक आजीवन प्रक्रिया के रूप में देखा जाता था जिसका उद्देश्य व्यक्ति, समाज और प्रकृति के बीच सामंजस्य स्थापित करना था। अनुभवात्मक अधिगम, चिंतन और शिक्षक–छात्र संबंधों पर जोर ने नैतिक चरित्र के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। एनईपी 2020 आधुनिक पाठ्यक्रम में भारतीय ज्ञान प्रणालियों के एकीकरण को बढ़ावा देकर इन परंपराओं की प्रासंगिकता को स्वीकार करता है, जिससे एक मूल्य–आधारित शैक्षिक वातावरण को बढ़ावा मिलता है जो सांस्कृतिक रूप से सुदृढ़ और नैतिक रूप से उन्मुख है (बर्मन, 2025)।

इसके अलावा, भारतीय ज्ञान परंपराएँ केवल सूचना प्राप्त करने के बजाय मुक्ति और ज्ञानोदय के साधन के रूप में षविद्याष की अवधारणा पर जोर देती हैं। यह परिप्रेक्ष्य इस विचार को पुष्ट करता है कि सच्ची शिक्षा से ज्ञान, नैतिक चेतना और सामाजिक उत्तरदायित्व का विकास होना चाहिए। इन सिद्धांतों को शामिल करके, नैतिक शिक्षा एक परिवर्तनकारी प्रक्रिया बन जाती है जो व्यक्तियों को सार्थक और उद्देश्यपूर्ण जीवन की ओर मार्गदर्शन करती है।

भारत में नैतिक शिक्षा की आधारशिला मुख्य रूप से धर्म की अवधारणा, व्यापक मूल्य प्रणालियों और मानवतावादी आदर्शों द्वारा निर्देशित होती है। धर्म नैतिक नियम या कर्तव्य का प्रतिनिधित्व करता है जो धार्मिकता, न्याय और सामाजिक सद्भाव के अनुसार व्यक्तिगत व्यवहार को नियंत्रित करता है। यह नियमों का एक कठोर समूह नहीं है, बल्कि एक गतिशील और संदर्भ–संवेदनशील सिद्धांत है जो व्यक्तियों को समाज में उनकी भूमिकाओं और जिम्मेदारियों के आधार पर नैतिक रूप से कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करता है। शिक्षा के संदर्भ में, धर्म की अवधारणा शिक्षार्थियों को कर्तव्य, सत्यनिष्ठा और नैतिक निर्णय लेने के महत्व को समझने में मदद करती है (इस्सर एट अल., 2024)।

धर्म के अतिरिक्त, भारतीय दार्शनिक चिंतन सत्य, अहिंसा, करुणा और संयम जैसे सार्वभौमिक मूल्यों पर जोर देता है। ये मूल्य व्यक्तिगत आचरण और सामाजिक मेलजोल के लिए नैतिक आधार बनाते हैं। नैतिक शिक्षा का उद्देश्य इन मूल्यों को आत्मसात करना है ताकि वे व्यक्ति के जीवन में मार्गदर्शक सिद्धांत बन सकें। एनईपी 2020 सहानुभूति, विविधता के प्रति सम्मान और दूसरों के प्रति जिम्मेदारी की भावना को बढ़ावा देने वाली शिक्षा की वकालत करके इन मूल्य प्रणालियों के महत्व को सुदृढ़ करता है (बर्मन, 2025)।

मानवतावाद एक अन्य महत्वपूर्ण नैतिक ढांचा है जो भारत में नैतिक शिक्षा का आधार बनता है। यह प्रत्येक व्यक्ति की अंतर्निहित गरिमा, मूल्य और क्षमता पर बल देता है, और समानता, न्याय और पारस्परिक सम्मान जैसे मूल्यों को बढ़ावा देता है। मानवतावादी शिक्षा शिक्षार्थियों को दूसरों के कल्याण के प्रति सहानुभूति और चिंता की भावना विकसित करने के लिए प्रोत्साहित करती है, जिससे समावेशी और करुणामय समाजों का निर्माण होता है। एनईपी 2020 शिक्षार्थी–केंद्रित दृष्टिकोण, समावेशी शिक्षा और शैक्षणिक कौशल के साथ–साथ सामाजिक–भावनात्मक दक्षताओं के विकास को बढ़ावा देकर इस परिप्रेक्ष्य के अनुरूप है (श्रीवास्तव, 2025)।

इसके अतिरिक्त, शिक्षा प्रणाली में इन नैतिक ढांचों का एकीकरण शिक्षार्थियों को तेजी से बदलती दुनिया में जटिल नैतिक दुविधाओं का सामना करने में सक्षम बनाता है। धर्म, सार्वभौमिक मूल्यों और मानवतावाद जैसे सिद्धांतों पर आधारित शिक्षा के माध्यम से, एनईपी 2020 ऐसे व्यक्तियों का निर्माण करना चाहता है जो न केवल ज्ञानवान हों बल्कि नैतिक रूप से जिम्मेदार और सामाजिक रूप से जागरूक भी हों। यह दृष्टिकोण पारंपरिक ज्ञान और आधुनिक शैक्षिक लक्ष्यों के संश्लेषण को दर्शाता है, यह सुनिश्चित करते हुए कि नैतिक शिक्षा समकालीन समाज में प्रासंगिक और प्रभावशाली बनी रहे (इस्सर एट अल., 2024)।

Table 1: तालिका NEP 2020 के अंतर्गत नैतिक शिक्षा के विस्तारित दार्शनिक आयाम

आयाम	विवरण	NEP 2020 के प्रति प्रासंगिकता
परंपरा और आधुनिकता का एकीकरण	भारतीय दार्शनिक परंपराओं को समकालीन वैश्विक शैक्षिक आवश्यकताओं के साथ जोड़ना	यह सुनिश्चित करता है कि मूल्य–आधारित शिक्षा सांस्कृतिक रूप से आधारित होने के साथ–साथ वैश्विक रूप से भी प्रासंगिक हो (Shrivastava, 2025)
आंतरिक परिवर्तन (आत्म–विकास)	आत्म–जागरूकता, आत्म–निरीक्षण और भावनात्मक कल्याण पर ध्यान केंद्रित	आंतरिक नैतिक दिशा–निर्देश और नैतिक निर्णय क्षमता के विकास को प्रोत्साहित करता है (Barman, 2025)
समग्र दृष्टिकोण (अंतरसंबंधिता)	व्यक्ति, समाज और प्रकृति के बीच संबंध पर जोर	सामाजिक जिम्मेदारी, पर्यावरणीय जागरूकता और समावेशी सोच को बढ़ावा देता है (Isser et al., 2024)
नैतिकता का आधुनिक संदर्भ में अनुप्रयोग	सतत विकास और न्याय जैसे समकालीन मुद्दों पर पारंपरिक मूल्यों का प्रयोग	नैतिक शिक्षा को वास्तविक जीवन स्थितियों में प्रासंगिक और उपयोगी बनाता है (Shrivastava, 2025)
चिंतनशील और संवादात्मक अधिगम	चर्चा, वाद–विवाद और आलोचनात्मक चिंतन के माध्यम से सीखना	नैतिक तर्क, आलोचनात्मक सोच और नैतिक समझ को बढ़ाता है (Barman, 2025)
मानवतावादी दृष्टिकोण	सभी के प्रति गरिमा, समानता, सहानुभूति और सम्मान पर ध्यान	NEP 2020 के समावेशी और छात्र–केंद्रित दृष्टिकोण के अनुरूप है (Isser et al., 2024)

मूल्य आंतरीकरण	सैद्धांतिक समझ से व्यावहारिक मूल्यों के क्रियान्वयन की ओर परिवर्तन	व्यवहार में परिवर्तन और चरित्र निर्माण सुनिश्चित करता है (Shrivastava, 2025; Isser et al., 2024)

निष्कर्षतः, भारत में नैतिक शिक्षा की दार्शनिक नींव एक सुदृढ़ और बहुआयामी ढांचा प्रदान करती है जो नैतिक विकास, आत्म–साक्षात्कार और सामाजिक उत्तरदायित्व पर बल देती है। भारतीय ज्ञान परंपराओं और धर्म, मूल्यों और मानवतावाद जैसे नैतिक सिद्धांतों का उपयोग करते हुए, राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 नैतिक शिक्षा को मुख्यधारा की शिक्षा प्रणाली में एकीकृत करने के लिए एक व्यापक दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है। यह एकीकरण सर्वांगीण व्यक्तित्वों के पोषण के लिए आवश्यक है जो मजबूत नैतिक सिद्धांतों को बनाए रखते हुए समाज में सकारात्मक योगदान देने में सक्षम हों।

4. एनईपी 2020: समग्र और मूल्य-आधारित शिक्षा का दृष्टिकोण

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 एक परिवर्तनकारी ढांचा है जिसका उद्देश्य समाज की नैतिक और सांस्कृतिक नींव को संरक्षित करते हुए 21वीं सदी की मांगों को पूरा करने के लिए भारतीय शिक्षा प्रणाली का पुनर्गठन करना है। इसका एक सबसे महत्वपूर्ण योगदान समग्र और मूल्य–आधारित शिक्षा को प्राथमिकता देने वाले दृष्टिकोण का प्रतिपादन है। केवल अकादमिक उपलब्धि पर केंद्रित संकीर्ण दृष्टिकोण से आगे बढ़ते हुए, एनईपी 2020 एक ऐसी शिक्षा प्रणाली की परिकल्पना करती है जो शिक्षार्थियों के बौद्धिक, भावनात्मक, नैतिक और सामाजिक आयामों का पोषण करती है। यह व्यापक दृष्टिकोण ऐसे सर्वांगीण व्यक्तियों के विकास की दिशा में एक प्रतिमान परिवर्तन को दर्शाता है जो न केवल ज्ञानवान हैं बल्कि नैतिक रूप से जिम्मेदार और सामाजिक रूप से जागरूक भी हैं (चन्नावर, 2023)।

एनईपी 2020 के मूल सिद्धांत लचीलेपन, समावेशिता, बहुविषयक शिक्षा और आलोचनात्मक सोच एवं रचनात्मकता को बढ़ावा देने पर आधारित हैं। यह नीति शिक्षार्थी–केंद्रित दृष्टिकोण का समर्थन करती है जो छात्रों की विविध आवश्यकताओं, रुचियों और क्षमताओं को मान्यता देता है। यह विषयों के बीच कठोर सीमाओं को हटाने पर बल देती है, जिससे शिक्षार्थी विषयों की एक विस्तृत श्रृंखला का अन्वेषण कर सकें और ज्ञान की व्यापक समझ विकसित कर सकें। यह बहुविषयक परिप्रेक्ष्य नवाचार, समस्या–समाधान कौशल और सीखने के साथ गहन जुड़ाव को बढ़ावा देने के लिए आवश्यक है।

एक अन्य महत्वपूर्ण सिद्धांत रटने की पद्धति से हटकर योग्यता–आधारित शिक्षा की ओर बदलाव है। एनईपी 2020 अनुभवात्मक शिक्षा, पूछताछ–आधारित दृष्टिकोण और सतत मूल्यांकन को बढ़ावा देता है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि छात्रों में वैचारिक स्पष्टता और व्यावहारिक समझ विकसित हो। हाल के अध्ययनों में उजागर किए गए मूल्यांकन प्रणालियों के सुधार का ध्यान न केवल संज्ञानात्मक क्षमताओं बल्कि आलोचनात्मक सोच, सहयोग और नैतिक तर्क जैसे कौशलों के मूल्यांकन पर भी केंद्रित है (यादव एट अल., 2025)। इस परिवर्तन का उद्देश्य एक अधिक सार्थक और प्रासंगिक शैक्षिक अनुभव का निर्माण करना है जो शिक्षार्थियों को वास्तविक दुनिया की चुनौतियों के लिए तैयार करता है।

समावेशिता और समानता भी नीति के दृष्टिकोण के केंद्र में हैं। एनईपी 2020 का उद्देश्य सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि, लिंग या भौगोलिक स्थिति की परवाह किए बिना समाज के सभी वर्गों के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक पहुंच सुनिश्चित करना है। समावेशी प्रथाओं को बढ़ावा देकर और असमानताओं को दूर करके, नीति का लक्ष्य एक ऐसी न्यायसंगत शिक्षा प्रणाली का निर्माण करना है जो प्रत्येक शिक्षार्थी के समग्र विकास का समर्थन करे। इसके अतिरिक्त, प्रौद्योगिकी और डिजिटल शिक्षण उपकरणों का एकीकरण शैक्षिक ढांचे के भीतर पहुंच और नवाचार को और बढ़ाता है।

एनईपी 2020 की एक प्रमुख विशेषता नैतिकता, मूल्यों और समग्र विकास पर इसका प्रबल बल है। नीति मानती है कि शिक्षा को केवल ज्ञान और कौशल के हस्तांतरण तक सीमित नहीं रहना चाहिए, बल्कि इसमें नैतिक मूल्यों, नैतिक जागरूकता और सामाजिक जिम्मेदारी का विकास भी शामिल होना चाहिए। यह स्कूली शिक्षा के सभी स्तरों पर मूल्य–आधारित शिक्षा के एकीकरण की वकालत करती है, यह सुनिश्चित करते हुए कि शिक्षार्थी ईमानदारी, सहानुभूति, विविधता के प्रति सम्मान और समाज के प्रति कर्तव्य की भावना जैसे गुणों का विकास करें (राय एट अल., 2025)।

एनईपी 2020 में परिकल्पित समग्र विकास में व्यक्ति के संज्ञानात्मक, भावनात्मक, सामाजिक, शारीरिक और नैतिक पहलुओं का संतुलित विकास शामिल है। यह नीति कला, खेल, व्यावसायिक शिक्षा और जीवन कौशल को पाठ्यक्रम के अभिन्न अंग के रूप में शामिल करने को बढ़ावा देती है। यह दृष्टिकोण शिक्षार्थियों में रचनात्मकता, भावनात्मक बुद्धिमत्ता, टीम वर्क और लचीलेपन को पोषित करने में सहायक है। अनुभवात्मक और सहभागी अधिगम के अवसर प्रदान करके, एनईपी 2020 छात्रों को अपने परिवेश से सक्रिय रूप से जुड़ने और स्वयं तथा दूसरों की गहरी समझ विकसित करने के लिए प्रोत्साहित करती है (चन्नावर, 2023)।

इसके अतिरिक्त, यह नीति जिम्मेदार नागरिकों के निर्माण में नैतिक और नैतिक तर्क के महत्व पर बल देती है। तेजी से बदलती दुनिया में, जहां जटिल सामाजिक और तकनीकी चुनौतियां मौजूद हैं, नैतिक निर्णय लेने और ईमानदारी से कार्य करने की क्षमता अत्यंत महत्वपूर्ण है। एनईपी 2020 पाठ्यक्रम में नैतिक विचारों को समाहित करके और कक्षाओं में चिंतनशील सोच और मूल्य–उन्मुख चर्चाओं को बढ़ावा देकर इस आवश्यकता को पूरा करती है। मूल्य–आधारित शिक्षा पर जोर यह सुनिश्चित करता है कि शिक्षार्थी न केवल ज्ञान से बल्कि विविध जीवन स्थितियों से निपटने के लिए आवश्यक नैतिक दिशा–निर्देश से भी सुसज्जित हों (राय एट अल., 2025)।

इसके अतिरिक्त, एनईपी 2020 शिक्षा को सतत विकास, सामाजिक न्याय और राष्ट्रीय एकता जैसे व्यापक सामाजिक लक्ष्यों के साथ संरेखित करती है। पर्यावरण चेतना, समावेशिता और सांस्कृतिक विविधता के प्रति सम्मान जैसे मूल्यों को बढ़ावा देकर, यह नीति अधिक न्यायपूर्ण और सामंजस्यपूर्ण समाज के निर्माण में योगदान देती

है। इन मूल्यों का शैक्षिक ढांचे में एकीकरण राष्ट्रीय और वैश्विक समुदायों में सकारात्मक योगदान देने में सक्षम व्यक्तियों के विकास के प्रति प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

निष्कर्षतः, एनईपी 2020 समग्र और मूल्य–आधारित शिक्षा के लिए एक व्यापक दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है जो शैक्षणिक उत्कृष्टता को नैतिक विकास के साथ सामंजस्य स्थापित करने का प्रयास करती है। अपने मूल सिद्धांतों और मूल्यों पर जोर के माध्यम से, यह नीति शिक्षा के उद्देश्य को बौद्धिक रूप से सक्षम, नैतिक रूप से दृढ़ और सामाजिक रूप से जिम्मेदार सर्वांगीण व्यक्तियों के पोषण के साधन के रूप में पुनर्परिभाषित करती है। यह दृष्टिकोण न केवल शिक्षा प्रणाली की वर्तमान चुनौतियों का समाधान करता है, बल्कि अधिक समावेशी, नैतिक और सतत भविष्य की नींव भी रखता है।

5. राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 में नैतिक एवं चरित्र शिक्षा का एकीकरण राष्ट्रीय शिक्षा नीति

(एनईपी) 2020 में नैतिक एवं चरित्र शिक्षा को एक अलग या पूरक घटक के रूप में मानने के बजाय, इसे व्यापक शैक्षिक ढांचे में सहज रूप से एकीकृत करने की परिकल्पना की गई है। यह एकीकरण पारंपरिक विषय–आधारित शिक्षा से हटकर एक अधिक समग्र मॉडल की ओर बदलाव को दर्शाता है, जो नैतिक, सामाजिक रूप से जिम्मेदार और आत्म–जागरूक व्यक्तियों के विकास पर बल देता है। पाठ्यक्रम निर्माण, शिक्षण विधियों और अधिगम अनुभवों में नैतिक एवं चरित्र शिक्षा को समाहित करके, एनईपी 2020 का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि मूल्यों को केवल पढ़ाया ही न जाए, बल्कि शिक्षार्थियों द्वारा सक्रिय रूप से अभ्यास और आत्मसात किया जाए। एनईपी 2020 में नैतिक एवं चरित्र शिक्षा को एकीकृत करने का एक प्रमुख पहलू इसके पाठ्यक्रम निर्माण और शिक्षण विधियों के दृष्टिकोण में निहित है। यह नीति एक लचीले, बहु–विषयक पाठ्यक्रम की वकालत करती है जो विभिन्न विषयों और अधिगम क्षेत्रों में मूल्य–आधारित शिक्षा को समाहित करता है। नैतिक शिक्षा को विशिष्ट पाठ्यक्रमों तक सीमित रखने के बजाय, एनईपी 2020 इसे शिक्षण और अधिगम के सभी पहलुओं में समाहित करने को बढ़ावा देती है, जिससे छात्र विविध संदर्भों में नैतिक मुद्दों से जुड़ सकें।

पाठ्यक्रम को आलोचनात्मक सोच, चिंतन और संवाद को प्रोत्साहित करने के लिए डिजाइन किया गया है, जिससे शिक्षार्थी नैतिक दुविधाओं का पता लगा सकें और नैतिक तर्क कौशल विकसित कर सकें। चर्चा–आधारित शिक्षण, सहयोगात्मक गतिविधियाँ और समस्या–समाधान कार्य जैसे शिक्षण दृष्टिकोण छात्रों को वास्तविक जीवन की उन स्थितियों से जुड़ने के अवसर प्रदान करते हैं जिनमें नैतिक निर्णय की आवश्यकता होती है। यह परिवर्तन शिक्षा को ज्ञान और चरित्र दोनों को आकार देने वाली प्रक्रिया में बदलने के व्यापक उद्देश्य के अनुरूप है (कुरियन और चंद्रमना, 2020)।

इसके अलावा, गांधीवादी शैक्षिक विचार सहित दार्शनिक परंपराओं का प्रभाव सत्य, अहिंसा, आत्म–अनुशासन और सामाजिक उत्तरदायित्व जैसे मूल्यों पर जोर देने में स्पष्ट है। नैतिक जागरूकता और व्यक्तिगत विकास को बढ़ावा देने के लिए इन सिद्धांतों को शिक्षण पद्धतियों में एकीकृत किया गया है। पाठ्यक्रम और शिक्षण विधियों को ऐसी मूल्य प्रणालियों के साथ संरेखित करके, एनईपी 2020 यह सुनिश्चित करता है कि नैतिक शिक्षा एक सैद्धांतिक संरचना के बजाय एक जीवंत अनुभव बन जाए (मेहता और प्रजापति, 2025)।

एनईपी 2020 नैतिक और चरित्र विकास को बढ़ावा देने के साधन के रूप में अनुभवात्मक शिक्षा पर विशेष बल देता है। परियोजना–आधारित शिक्षा, सामुदायिक सहभागिता, इंटर्नशिप और सेवा–आधारित शिक्षा जैसे अनुभवात्मक शिक्षा दृष्टिकोण छात्रों को वास्तविक दुनिया के संदर्भों में नैतिक सिद्धांतों को लागू करने के अवसर प्रदान करते हैं। इन अनुभवों के माध्यम से, शिक्षार्थी सहानुभूति, सहयोग, जिम्मेदारी और दूसरों के प्रति सम्मान जैसे मूल्यों की गहरी समझ विकसित करते हैं।

जीवन कौशल शिक्षा इस एकीकरण का एक अन्य महत्वपूर्ण घटक है। संचार, निर्णय लेने की क्षमता, भावनात्मक बुद्धिमत्ता, अनुकूलनशीलता और संघर्ष समाधान जैसे कौशल जटिल सामाजिक परिवेश में आगे बढ़ने के लिए आवश्यक हैं। एनईपी 2020 यह मानता है कि इन कौशलों का विकास नैतिक और चरित्र निर्माण से निकटता से जुड़ा हुआ है। पाठ्यक्रम में जीवन कौशल को शामिल करके, नीति का उद्देश्य शिक्षार्थियों को नैतिक निर्णय लेने और वास्तविक जीवन की चुनौतियों का प्रभावी ढंग से सामना करने की क्षमता से लैस करना है (मोंडल एट अल., 2024)।

एनईपी 2020 के तहत मूल्यों का समावेश केवल औपचारिक शिक्षा तक सीमित नहीं है, बल्कि समग्र शिक्षण वातावरण और संस्थागत संस्कृति तक फैला हुआ है। विद्यालयों और उच्च शिक्षा संस्थानों को ऐसे वातावरण बनाने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है जो सम्मान, समावेशिता और सहयोग को बढ़ावा दें। समूह कार्य, सांस्कृतिक कार्यक्रम और सामुदायिक सेवा पहल जैसी गतिविधियाँ मूल्यों को आत्मसात करने में और अधिक सहायक होती हैं। ये अभ्यास शिक्षार्थियों को अमूर्त नैतिक अवधारणाओं को ठोस कार्यों में बदलने में मदद करते हैं, जिससे उनका नैतिक चरित्र मजबूत होता है।

इसके अतिरिक्त, एनईपी 2020 मूल्यों के विकास में चिंतनशील अभ्यासों के महत्व पर बल देती है। विद्यार्थियों को अपने अनुभवों, कार्यों और निर्णयों पर चिंतन करने के लिए प्रोत्साहित करना आत्म–जागरूकता और नैतिक चेतना विकसित करने में सहायक होता है। यह चिंतनशील आयाम शिक्षार्थियों को अपने व्यवहार का आलोचनात्मक मूल्यांकन करने और उसे नैतिक सिद्धांतों के अनुरूप ढालने में सक्षम बनाता है, जिससे उनके दीर्घकालिक चरित्र विकास में योगदान होता है।

Table 2: तालिका NEP 2020 के अंतर्गत नैतिक एवं चरित्र शिक्षा का एकीकरण

घटक	विवरण	NEP 2020 के अंतर्गत शैक्षिक निहितार्थ
समग्र एकीकरण	नैतिक एवं चरित्र शिक्षा को समग्र शिक्षा ढांचे में समाहित करना	अलग विषय के बजाय निरंतर मूल्य–आधारित अधिगम को बढ़ावा (Kurien & Chandramana, 2020)
पाठ्यक्रम निर्माण	लचीला एवं बहुविषयक पाठ्यक्रम जिसमें मूल्यों का समावेश	विभिन्न विषयों में नैतिक समझ का विकास
शिक्षण पद्धति	चर्चा–आधारित, सहयोगात्मक एवं समस्या–समाधान आधारित अधिगम	नैतिक तर्क एवं निर्णय क्षमता का विकास (Kurien & Chandramana, 2020)
दार्शनिक आधार	गांधीवादी मूल्यों जैसे सत्य, अहिंसा, आत्म–अनुशासन का समावेश	शिक्षा को भारतीय नैतिक परंपराओं से जोड़ना (Mehta & Prajapati, 2025)
अनुभवात्मक अधिगम	प्रोजेक्ट, इंटर्नशिप एवं सामुदायिक सहभागिता के माध्यम से सीखना	वास्तविक जीवन में मूल्यों का अनुप्रयोग
जीवन कौशल विकास	संचार, भावनात्मक बुद्धिमत्ता, निर्णय क्षमता, अनुकूलनशीलता	नैतिक व्यवहार एवं जिम्मेदारी का विकास (Mondal et al., 2024)
संस्थागत संस्कृति	सम्मान, समावेशन एवं सहयोग को बढ़ावा देने वाला वातावरण	कक्षा के बाहर भी मूल्य शिक्षा को सुदृढ़ करना
मूल्य संवर्धन गतिविधियाँ	समूह कार्य, सांस्कृतिक कार्यक्रम, सामाजिक सेवा	सैद्धांतिक मूल्यों को व्यवहार में परिवर्तित करना
चिंतनशील अभ्यास	आत्म–चिंतन, आलोचनात्मक सोच एवं व्यवहार का मूल्यांकन	आत्म–जागरूकता एवं चरित्र निर्माण को बढ़ावा
परिणाम उन्मुखता	नैतिक एवं जिम्मेदार नागरिकों का निर्माण	शिक्षा को सामाजिक एवं नैतिक लक्ष्यों से जोड़ना

निष्कर्षतः, राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 में नैतिक और चरित्र शिक्षा का समावेश पाठ्यक्रम नवाचार, शिक्षार्थी–केंद्रित शिक्षण पद्धति और अनुभवात्मक अधिगम को संयोजित करने वाले एक व्यापक दृष्टिकोण के माध्यम से प्राप्त किया गया है। शैक्षिक प्रक्रिया में मूल्यों को समाहित करके और जीवन कौशल विकास को बढ़ावा देकर, यह नीति सुनिश्चित करती है कि नैतिक शिक्षा समग्र विकास का अभिन्न अंग बन जाए। यह दृष्टिकोण न केवल शिक्षा की गुणवत्ता को बढ़ाता है, बल्कि व्यक्तियों को एक मजबूत नैतिक आधार के साथ समाज में सार्थक योगदान देने के लिए भी तैयार करता है।

6. शिक्षकों और शैक्षणिक संस्थानों की भूमिका

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 के तहत नैतिक और चरित्र शिक्षा का सफल कार्यान्वयन काफी हद तक शिक्षकों और शैक्षणिक संस्थानों द्वारा निभाई गई सक्रिय भूमिका पर निर्भर करता है। यद्यपि नीति मूल्य–आधारित और समग्र शिक्षा के लिए एक व्यापक ढांचा प्रदान करती है, इसकी प्रभावशीलता इस बात पर निर्भर करती है कि इन सिद्धांतों को कक्षा व्यवहार और संस्थागत संस्कृति में कैसे उतारा जाता है। शिक्षक परिवर्तन के प्रमुख सूत्रधार के रूप में कार्य करते हैं, और संस्थान ऐसे वातावरण के रूप में कार्य करते हैं जहां मूल्यों का पोषण, अभ्यास और सुदृढ़ीकरण किया जाता है। साथ मिलकर, वे नैतिक रूप से जिम्मेदार और सामाजिक रूप से जागरूक व्यक्तियों को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

एनईपी 2020 के संदर्भ में, शिक्षक की भूमिका ज्ञान प्रदान करने वाले से कहीं अधिक व्यापक हो गई है और यह नैतिक मार्गदर्शक और सलाहकार की भूमिका तक पहुँच गई है। शिक्षकों से अपेक्षा की जाती है कि वे नैतिक व्यवहार का आदर्श प्रस्तुत करें, सत्यनिष्ठा का प्रदर्शन करें और उन मूल्यों को स्वयं अपने जीवन में उतारें जिन्हें वे विद्यार्थियों में विकसित करना चाहते हैं। उनके कार्य, दृष्टिकोण और संवाद विद्यार्थियों के नैतिक विकास को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करते हैं, जिससे वे चरित्र निर्माण की प्रक्रिया में केंद्रीय भूमिका निभाते हैं।

Figure 2: "एनईपी 2020 के अंतर्गत नैतिक एवं चरित्रवान शिक्षा को बढ़ावा देने में शिक्षकों और शैक्षणिक संस्थानों की भूमिका"

नैतिक मार्गदर्शक के रूप में शिक्षक की अवधारणा विद्यार्थियों को नैतिक सिद्धांतों को समझने और उन्हें वास्तविक जीवन की परिस्थितियों में लागू करने में मार्गदर्शन करने पर बल देती है। मूल्यों को थोपने के बजाय, शिक्षकों को ऐसे शिक्षण वातावरण बनाने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है जो संवाद, चिंतन और आलोचनात्मक सोच को बढ़ावा देते हैं। यह दृष्टिकोण विद्यार्थियों को अपनी नैतिक तर्क क्षमता विकसित करने और सूचित नैतिक निर्णय लेने में सक्षम बनाता है। एनईपी 2020 शिक्षकों को मूल्य–आधारित शिक्षा को अपने शिक्षण अभ्यासों में एकीकृत करने के लिए आवश्यक कौशल से लैस करने

हेतु शिक्षक प्रशिक्षण और व्यावसायिक विकास के महत्व पर प्रकाश डालता है (कुमार, 2024)।

इसके अलावा, शिक्षकों की शिक्षा के कार्यक्रमों को एनईपी 2020 के दृष्टिकोण के अनुरूप पुनर्गठित किया जा रहा है, जिसमें शिक्षकों में शिक्षण क्षमता, भावनात्मक बुद्धिमत्ता और नैतिक जागरूकता के विकास पर ध्यान केंद्रित किया गया है। इन गुणों को बढ़ावा देकर, शिक्षक समकालीन समाज में छात्रों के सामने आने वाली विविध नैतिक और सामाजिक चुनौतियों का बेहतर ढंग से सामना करने में सक्षम हो जाते हैं। चिंतनशील शिक्षण पद्धतियों पर जोर देने से शिक्षकों को अपने मूल्यों और शिक्षण दृष्टिकोणों का निरंतर मूल्यांकन करने के लिए भी प्रोत्साहन मिलता है, जिससे नैतिक मार्गदर्शक के रूप में उनकी प्रभावशीलता बढ़ती है (बर्मन, 2021)।

शिक्षा संस्थान नैतिक और चरित्र विकास को बढ़ावा देने में समान रूप से महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, इसके लिए उन्हें मूल्य–आधारित शिक्षा को बढ़ावा देने वाले वातावरण बनाने चाहिए। एनईपी 2020 संस्थानों को ऐसे स्थानों के रूप में परिकल्पित करता है जहां नैतिक सिद्धांत दैनिक व्यवहार, अंतःक्रियाओं और संगठनात्मक संस्कृति में समाहित होते हैं। इसमें न केवल औपचारिक पाठ्यक्रम बल्कि अप्रत्यक्ष पाठ्यक्रम भी शामिल है, जिसमें संस्थागत प्रथाओं के माध्यम से अप्रत्यक्ष रूप से संप्रेषित मानदंड, मूल्य और व्यवहार शामिल हैं।

संस्थान समावेशिता, सम्मान, सहयोग और सामाजिक उत्तरदायित्व को बढ़ावा देने वाली नीतियों और कार्यक्रमों को तैयार करने के लिए जिम्मेदार हैं। सामुदायिक सहभागिता, सामाजिक सेवा पहल, सांस्कृतिक कार्यक्रम और सहयोगात्मक शिक्षण अनुभव जैसी गतिविधियाँ छात्रों को मूल्यों का अभ्यास करने और उन्हें आत्मसात करने के व्यावहारिक अवसर प्रदान करती हैं। ऐसी गतिविधियों में भाग लेने से शिक्षार्थी सहानुभूति, टीम वर्क और नागरिक उत्तरदायित्व की भावना विकसित करते हैं, जो चरित्र शिक्षा के आवश्यक घटक हैं (श्रीकला और कुमार, 2024)।

इसके अलावा, संस्थानों को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि उनकी प्रशासनिक प्रथाएं और शासन संरचनाएं नैतिक मानकों और पारदर्शिता को प्रतिबिंबित करें। एक सहायक और मूल्य–उन्मुख संस्थागत वातावरण छात्रों और कर्मचारियों के बीच विश्वास, पारस्परिक सम्मान और अपनेपन की भावना को बढ़ावा देता है। इससे कक्षा में सिखाए गए मूल्यों को सुदृढ़ करके नैतिक शिक्षा की समग्र प्रभावशीलता बढ़ती है।

एनईपी 2020 शिक्षा के लिए एक समग्र दृष्टिकोण की आवश्यकता पर भी बल देती है, जिसमें शिक्षार्थियों के समग्र विकास को समर्थन देने के लिए शैक्षणिक, सह–पाठ्यक्रम और अतिरिक्त पाठ्यचर्या गतिविधियों को एकीकृत किया जाता है। संस्थानों को नीति के समग्र और मूल्य–आधारित शिक्षा के दृष्टिकोण के अनुरूप नवीन शिक्षण विधियों, अंतःविषयक दृष्टिकोणों और समावेशी प्रथाओं को अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है (कुमार, 2024)।

निष्कर्षतः, राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 के अंतर्गत नैतिक एवं चरित्र निर्माण शिक्षा के लक्ष्यों को साकार करने में शिक्षक और शैक्षणिक संस्थान महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। नैतिक मार्गदर्शक के रूप में शिक्षक छात्रों को नैतिक समझ और जिम्मेदार व्यवहार विकसित करने में मार्गदर्शन करते हैं, जबकि संस्थान मूल्य निर्माण के लिए आवश्यक वातावरण और अवसर प्रदान करते हैं। साथ मिलकर, वे एक व्यापक शैक्षिक पारिस्थितिकी तंत्र का निर्माण करते हैं जो न केवल बौद्धिक विकास बल्कि नैतिक अखंडता और सामाजिक जिम्मेदारी को भी पोषित करता है, जिससे सर्वांगीण व्यक्तित्व के विकास में योगदान मिलता है।

7. नैतिक विकास के लिए शिक्षण पद्धतियाँ

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 छात्रों में नैतिक एवं चरित्र निर्माण को बढ़ावा देने के लिए नवीन और शिक्षार्थी–केंद्रित शिक्षण पद्धतियों को अपनाने पर बल देती है। यह मानते हुए कि पारंपरिक रटने पर आधारित विधियों से नैतिक मूल्यों को प्रभावी ढंग से नहीं सिखाया जा सकता, नीति अनुभवात्मक, सहभागी और चिंतनशील शिक्षण विधियों का समर्थन करती है। इन पद्धतियों का उद्देश्य शिक्षार्थियों को सीखने की प्रक्रिया में सक्रिय रूप से शामिल करना है, जिससे वे अनुभव, अंतःक्रिया और गहन चिंतन के माध्यम से मूल्यों को आत्मसात कर सकें। इस तरह की शिक्षण पद्धतियों को शैक्षिक ढांचे में एकीकृत करके, एनईपी 2020 सार्थक सीखने के अनुभव बनाने का प्रयास करता है जो व्यक्तियों के नैतिक और समग्र विकास में योगदान करते हैं (वर्मा और कुमार, 2021)।

गतिविधि–आधारित अधिगम, विशेष रूप से नैतिक विकास को बढ़ावा देने के लिए, राष्ट्रीय नीति अधिनियम 2020 के तहत प्रोत्साहित किया जाने वाला एक प्रमुख शिक्षण दृष्टिकोण है। इस दृष्टिकोण में छात्रों को व्यावहारिक गतिविधियों, सहयोगात्मक कार्यों और समस्या–समाधान अभ्यासों में शामिल किया जाता है, जिनमें सक्रिय भागीदारी और निर्णय लेने की आवश्यकता होती है। ऐसी गतिविधियों के माध्यम से, शिक्षार्थी न केवल सैद्धांतिक अवधारणाओं को समझ पाते हैं, बल्कि व्यावहारिक परिस्थितियों में नैतिक मूल्यों को लागू भी कर पाते हैं।

गतिविधि–आधारित अधिगम छात्रों को सहयोग, सहानुभूति, जिम्मेदारी और दूसरों के प्रति सम्मान जैसे आवश्यक जीवन कौशल विकसित करने के अवसर प्रदान करता है। उदाहरण के लिए, समूह परियोजनाएं और टीम–आधारित कार्य शिक्षार्थियों को सहयोगात्मक रूप से काम करने, संघर्षों को सुलझाने और विविध दृष्टिकोणों की सराहना करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। ये अनुभव सकारात्मक दृष्टिकोण और नैतिक व्यवहार को आकार देने में सहायक होते हैं। इसके अतिरिक्त, भूमिका–निर्वाह, अनुकरण और समुदाय–आधारित परियोजनाओं जैसी गतिविधियां छात्रों को वास्तविक जीवन की नैतिक दुविधाओं का पता लगाने और एक सुरक्षित और सहायक वातावरण में नैतिक निर्णय लेने का अभ्यास करने की अनुमति देती हैं (खातून, 2025)।

इसके अलावा, गतिविधि–आधारित अधिगम राष्ट्रीय नीति अधिनियम 2020 द्वारा समर्थित योग्यता–आधारित दृष्टिकोण के अनुरूप है, जहां केवल ज्ञान प्राप्त करने के बजाय कौशल और मूल्यों के विकास पर

ध्यान केंद्रित किया जाता है। छात्रों को सार्थक गतिविधियों में शामिल करके, यह दृष्टिकोण सुनिश्चित करता है कि नैतिक शिक्षा एक अलग या अमूर्त अवधारणा के बजाय सीखने की प्रक्रिया का एक अभिन्न अंग बन जाए।

कहानी सुनाना और कथा–आधारित अधिगम नैतिक शिक्षा के शक्तिशाली साधन हैं, क्योंकि ये शिक्षार्थियों को मूल्यों और नैतिक सिद्धांतों से आकर्षक और सहज तरीके से जुड़ने में सक्षम बनाते हैं। कहानियाँ, चाहे साहित्य, इतिहास या सांस्कृतिक परंपराओं से ली गई हों, अक्सर नैतिक शिक्षा देती हैं और नैतिक और अनैतिक व्यवहार के परिणामों को दर्शाती हैं। कथाओं के माध्यम से, छात्र जटिल नैतिक स्थितियों का अन्वेषण कर सकते हैं, विभिन्न दृष्टिकोणों को समझ सकते हैं और दूसरों के प्रति सहानुभूति विकसित कर सकते हैं।

एनईपी 2020 मूल्य–आधारित शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए एक शिक्षण रणनीति के रूप में कहानी सुनाने के उपयोग को प्रोत्साहित करता है। कहानियों को पाठ्यक्रम में एकीकृत करके, शिक्षक सार्थक अधिगम अनुभव बना सकते हैं जो छात्रों की भावनाओं और कल्पना को प्रभावित करते हैं। कथाएँ आलोचनात्मक सोच के विकास को भी सुगम बनाती हैं, क्योंकि शिक्षार्थी पात्रों, स्थितियों और नैतिक विकल्पों का विश्लेषण करते हैं, जिससे उनकी नैतिक तर्क क्षमता में वृद्धि होती है (वर्मा और कुमार, 2021)।

चिंतनशील अभ्यास छात्रों को उनके अनुभवों, कार्यों और निर्णयों के बारे में गहराई से सोचने के लिए प्रोत्साहित करके नैतिक विकास को और मजबूत करते हैं। चिंतन शिक्षार्थियों को आत्म–जागरूकता विकसित करने में मदद करता है, जो उनके मूल्यों और व्यवहार को समझने के लिए आवश्यक है। डायरी लिखना, समूह चर्चा और स्व–मूल्यांकन जैसी तकनीकें छात्रों को अपने कार्यों का मूल्यांकन करने और यह विचार करने में सक्षम बनाती हैं कि वे उन्हें नैतिक सिद्धांतों के साथ कैसे संरेखित कर सकते हैं।

इसके अलावा, चिंतनशील अधिगम जवाबदेही और व्यक्तिगत विकास की भावना को बढ़ावा देता है, क्योंकि छात्र अपने कार्यों के स्वयं पर और दूसरों पर पड़ने वाले प्रभाव को पहचानना सीखते हैं। आत्मनिरीक्षण की यह प्रक्रिया मूल्यों को आत्मसात करने और एक मजबूत नैतिक चरित्र के विकास के लिए महत्वपूर्ण है। कहानी सुनाने को चिंतनशील अभ्यासों के साथ मिलाकर, शिक्षक एक समग्र अधिगम वातावरण बना सकते हैं जो संज्ञानात्मक और नैतिक विकास दोनों का समर्थन करता है (खातून, 2025)।

निष्कर्षतः, गतिविधि–आधारित अधिगम, कहानी सुनाना और चिंतनशील अभ्यास जैसे शिक्षण दृष्टिकोण एनईपी 2020 के ढांचे के भीतर नैतिक विकास को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ये दृष्टिकोण शिक्षार्थियों को मूल्य निर्माण की प्रक्रिया में सक्रिय रूप से शामिल करके पारंपरिक शिक्षण विधियों से आगे बढ़ते हैं। अनुभवात्मक अधिगम, भावनात्मक जुड़ाव और आलोचनात्मक चिंतन के अवसर प्रदान करके, वे छात्रों को नैतिक मूल्यों को आत्मसात करने और उन्हें वास्तविक जीवन के संदर्भों में लागू करने में सक्षम बनाते हैं, जिससे नैतिक रूप से जिम्मेदार और सामाजिक रूप से जागरूक व्यक्तियों के विकास में योगदान होता है।

8. एनईपी 2020 के तहत नैतिक शिक्षा को लागू करने में चुनौतियाँ

यद्यपि राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 भारतीय शिक्षा प्रणाली में नैतिक और चरित्र शिक्षा को एकीकृत करने के लिए एक प्रगतिशील और व्यापक दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है, फिर भी इसके प्रभावी कार्यान्वयन में कई चुनौतियाँ हैं। ये चुनौतियाँ संरचनात्मक सीमाओं, व्यावहारिक बाधाओं और व्यापक सामाजिक–सांस्कृतिक एवं संस्थागत कारकों से उत्पन्न होती हैं, जो शैक्षिक नीतियों के व्यवहार में परिवर्तन को प्रभावित करते हैं। मूल्य–आधारित और समग्र शिक्षा पर जोर देने के बावजूद, नीतिगत आदर्शों और जमीनी हकीकतों के बीच की खाई को पाटना एक जटिल कार्य बना हुआ है (श्रीवास्तव, 2025)।

एनईपी 2020 के अंतर्गत नैतिक शिक्षा को लागू करने में एक प्रमुख चुनौती मौजूदा शिक्षा प्रणाली की संरचनात्मक और व्यावहारिक सीमाओं में निहित है। कई संस्थानों में पारंपरिक पाठ्यक्रम और मूल्यांकन ढाँचे मूल्य–आधारित शिक्षा की तुलना में शैक्षणिक प्रदर्शन और मानकीकृत परीक्षण को प्राथमिकता देते रहते हैं। इससे नीति के समग्र विकास पर जोर और परीक्षा–उन्मुख शिक्षा पर प्रचलित ध्यान के बीच असंतुलन पैदा होता है। परिणामस्वरूप, वास्तविक कक्षा अभ्यास में नैतिक शिक्षा पर अक्सर सीमित ध्यान दिया जाता है।

एक अन्य महत्वपूर्ण बाधा पर्याप्त रूप से प्रशिक्षित शिक्षकों की कमी है जो नैतिक और चरित्र शिक्षा को अपने शिक्षण में प्रभावी ढंग से एकीकृत कर सकें। यद्यपि एनईपी 2020 शिक्षक प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण के महत्व पर प्रकाश डालती है, फिर भी इस परिवर्तन के लिए शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों और निरंतर व्यावसायिक विकास में महत्वपूर्ण बदलाव आवश्यक हैं। कई शिक्षकों में नैतिक मुद्दों पर चर्चा को सुगम बनाने और छात्रों को नैतिक तर्क में मार्गदर्शन करने के लिए आवश्यक शिक्षण कौशल, संसाधन या आत्मविश्वास की कमी हो सकती है (खातून, 2025)।

इसके अतिरिक्त, पहले से ही सघन पाठ्यक्रम में समय की कमी व्यावहारिक कठिनाइयाँ पैदा करती है। शिक्षक अक्सर शैक्षणिक आवश्यकताओं और मूल्य–आधारित गतिविधियों के बीच संतुलन बनाने के लिए संघर्ष करते हैं, जिससे नैतिक शिक्षा का सतही या असंगत कार्यान्वयन होता है। सीमित अवसंरचना, विशेष रूप से कम संसाधनों वाले विद्यालयों में, अनुभवात्मक और गतिविधि–आधारित शिक्षण विधियों के उपयोग को और भी सीमित कर देती है, जो प्रभावी नैतिक विकास के लिए आवश्यक हैं।

नैतिक और चरित्र शिक्षा का मूल्यांकन भी एक चुनौती है। शैक्षणिक विषयों के विपरीत, मूल्यों और नैतिक व्यवहार को पारंपरिक मूल्यांकन विधियों के माध्यम से मापना कठिन है। स्पष्ट मूल्यांकन ढाँचों के अभाव के कारण नैतिक शिक्षा के कार्यान्वयन में प्रगति की निगरानी करना और जवाबदेही सुनिश्चित करना चुनौतीपूर्ण हो जाता है (परीक और परीक, 2025)।

संरचनात्मक मुद्दों के अलावा, सामाजिक–सांस्कृतिक और संस्थागत कारक नैतिक शिक्षा के कार्यान्वयन को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करते हैं। भारत के विविध सांस्कृतिक, भाषाई और सामाजिक संदर्भों का अर्थ है कि समुदायों में मूल्यों और नैतिक दृष्टिकोणों में व्यापक भिन्नता हो सकती है। यह विविधता नैतिक शिक्षा के लिए एक मानकीकृत दृष्टिकोण को परिभाषित करने में चुनौतियाँ पैदा कर सकती है जो समावेशी हो और विभिन्न मान्यताओं और परंपराओं का सम्मान करती हो।

इसके अलावा, तीव्र सामाजिक परिवर्तन, वैश्वीकरण और डिजिटल मीडिया के प्रभाव ने युवा शिक्षार्थियों के मूल्य तंत्र और व्यवहारिक प्रतिरूपों को बदल दिया है। परस्पर विरोधी विचारधाराओं और सूचनाओं के संपर्क में आने से शिक्षकों के लिए एक सुसंगत नैतिक ढांचा स्थापित करना कठिन हो जाता है। ऐसे संदर्भ में, नैतिक व्यवहार को आकार देने में शिक्षा की भूमिका अधिक जटिल हो जाती है और इसके लिए संवेदनशील और अनुकूलनीय दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है (श्रीवास्तव, 2025)।

संस्थागत संस्कृति भी नैतिक शिक्षा को समर्थन देने या बाधित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। कई मामलों में, स्कूल और उच्च शिक्षा संस्थान अकादमिक रैंकिंग, प्लेसमेंट और प्रदर्शन मानकों पर अधिक ध्यान केंद्रित कर सकते हैं, जिससे मूल्य–आधारित पहलों को नजरअंदाज किया जा सकता है। नैतिक प्रथाओं को प्राथमिकता देने वाले सहायक संस्थागत वातावरण के अभाव में, नैतिक शिक्षा का कार्यान्वयन दैनिक व्यवहार में परिलक्षित होने के बजाय सैद्धांतिक चर्चाओं तक ही सीमित रह सकता है।

इसके अलावा, घर, स्कूल और समुदाय के वातावरण के बीच एकीकरण की कमी नैतिक शिक्षा के प्रभाव को कमजोर कर सकती है। शैक्षणिक संस्थानों में सिखाए गए मूल्यों को परिवार या सामाजिक परिवेश में हमेशा सुदृढ़ नहीं किया जा सकता है, जिससे छात्रों के नैतिक विकास में असंगति उत्पन्न हो सकती है। यह विसंगति शैक्षिक प्रक्रिया में सभी हितधारकों को शामिल करते हुए सहयोगात्मक दृष्टिकोण की आवश्यकता को उजागर करती है (सोनी और बंसल, 2025)।

निष्कर्षतः, यद्यपि राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 नैतिक और चरित्र शिक्षा के लिए एक मजबूत वैचारिक आधार प्रदान करती है, फिर भी इसके सफल कार्यान्वयन में संरचनात्मक अक्षमताओं, व्यावहारिक सीमाओं और सामाजिक–सांस्कृतिक जटिलताओं के कारण चुनौतियाँ उत्पन्न होती हैं। इन चुनौतियों का समाधान करने के लिए पाठ्यक्रम सुधार, शिक्षक प्रशिक्षण, संस्थागत प्रतिबद्धता और सामुदायिक सहभागिता में समन्वित प्रयासों की आवश्यकता है। केवल ऐसे व्यापक उपायों के माध्यम से ही मूल्य–आधारित और समग्र शिक्षा की परिकल्पना को प्रभावी ढंग से साकार किया जा सकता है, जिससे नैतिक रूप से सुदृढ़ और सामाजिक रूप से जिम्मेदार व्यक्तियों का विकास सुनिश्चित हो सके।

9. अवसर और भविष्य की दिशाएँ

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 न केवल भारतीय शिक्षा प्रणाली में मौजूदा कमियों को दूर करती है, बल्कि नैतिक और चरित्र शिक्षा के परिवर्तन के लिए महत्वपूर्ण अवसर भी प्रदान करती है। समग्र और मूल्य–आधारित शिक्षा पर जोर देकर, यह नीति एक दूरदर्शी ढांचा प्रदान करती है जो भारत में शिक्षा के नैतिक आधारों को नया रूप दे सकती है। पारंपरिक मूल्यों का आधुनिक शिक्षण नवाचारों के साथ एकीकरण नैतिक रूप से जिम्मेदार और सामाजिक रूप से जागरूक व्यक्तियों के विकास के लिए नए मार्ग प्रशस्त करता है। यदि इन अवसरों का प्रभावी ढंग से उपयोग किया जाए, तो शैक्षिक प्रथाओं और सामाजिक परिणामों दोनों में गहरा परिवर्तन आ सकता है (राय एट अल., 2025)। एनईपी 2020 शिक्षा के केंद्र में नैतिक और चरित्र–आधारित शिक्षा को पुनः स्थापित करके शैक्षिक परिदृश्य को बदलने के लिए व्यापक अवसर प्रदान करता है। प्रमुख अवसरों में से एक बहुविषयक और समग्र शिक्षा की ओर बदलाव है, जो मूल्यों और नैतिकता को विशिष्ट विषयों तक सीमित रखने के बजाय सभी विषयों में समाहित करने की अनुमति देता है। यह एकीकृत दृष्टिकोण सुनिश्चित करता है कि नैतिक शिक्षा शिक्षार्थियों के लिए एक सतत और जीवंत अनुभव बन जाए, जो उनके चिंतन, व्यवहार और निर्णय लेने की प्रक्रियाओं को प्रभावित करे।

अनुभवात्मक अधिगम, आलोचनात्मक चिंतन और चिंतनशील अभ्यासों पर जोर देने से परिवर्तन की संभावना और भी बढ़ जाती है। छात्रों को वास्तविक जीवन की स्थितियों, समुदाय–आधारित अधिगम और समस्या–समाधान गतिविधियों में शामिल करके शिक्षा अधिक सार्थक और प्रासंगिक बन जाती है। ऐसे दृष्टिकोण शिक्षार्थियों को सहानुभूति, सहयोग और उत्तरदायित्व जैसे मूल्यों को आत्मसात करने में सक्षम बनाते हैं, जिससे उनका नैतिक चरित्र मजबूत होता है। इसके अतिरिक्त, गांधीवादी सिद्धांतों जैसे सत्य, अहिंसा और आत्म–अनुशासन सहित भारतीय दार्शनिक परंपराओं का समावेश समकालीन शिक्षा के लिए एक मजबूत नैतिक आधार प्रदान करता है (मेहता और प्रजापति, 2025)।

तकनीकी प्रगति नैतिक शिक्षा को बढ़ावा देने के नए अवसर भी प्रदान करती है। डिजिटल प्लेटफॉर्म, इंटरैक्टिव उपकरण और ऑनलाइन अधिगम वातावरण का उपयोग आकर्षक और मूल्य–उन्मुख शैक्षिक सामग्री बनाने के लिए किया जा सकता है। ये उपकरण नैतिक मुद्दों पर चर्चा को सुगम बना सकते हैं, सहयोगात्मक अधिगम को बढ़ावा दे सकते हैं और विविध दृष्टिकोणों तक पहुंच प्रदान कर सकते हैं, जिससे शिक्षार्थियों का नैतिक विकास समृद्ध होता है। एनईपी 2020 में डिजिटल एकीकरण पर जोर यह सुनिश्चित करता है कि शिक्षा की पहुंच और गुणवत्ता दोनों को बढ़ाने के लिए इन अवसरों का प्रभावी ढंग से उपयोग किया जा सके।

इसके अलावा, योग्यता–आधारित शिक्षा और जीवन कौशल विकास पर जोर देने से नैतिक जागरूकता और सामाजिक जिम्मेदारी को बढ़ावा देने के लिए अनुकूल वातावरण बनता है। भावनात्मक बुद्धिमत्ता, संचार और निर्णय लेने जैसे कौशल नैतिक विकास से घनिष्ठ रूप से जुड़े हुए हैं और नवीन शिक्षण विधियों के माध्यम से इन्हें प्रभावी ढंग से विकसित किया जा सकता है। यह समग्र दृष्टिकोण शिक्षा को समाज में सकारात्मक योगदान देने में सक्षम सर्वांगीण व्यक्तित्वों के

विकास के व्यापक लक्ष्य के साथ जोड़ता है (गिरी, 2025)।

एनईपी 2020 के कार्यान्वयन से नैतिक और चरित्र शिक्षा के भविष्य पर महत्वपूर्ण नीतिगत प्रभाव पड़ते हैं। प्राथमिक प्रभावों में से एक यह है कि मूल्य–आधारित शिक्षा को स्कूली शिक्षा और उच्च शिक्षा के सभी स्तरों पर व्यवस्थित रूप से एकीकृत करने के लिए निरंतर पाठ्यक्रम सुधार की आवश्यकता है। नीति निर्माताओं को स्पष्ट दिशा–निर्देश और रूपरेखा विकसित करनी चाहिए जो शैक्षणिक कार्यक्रमों में नैतिक शिक्षा परिणामों को शामिल करने में सहायक हों।

शिक्षक शिक्षा और व्यावसायिक विकास भी नीतिगत हस्तक्षेप के लिए महत्वपूर्ण क्षेत्र के रूप में उभरते हैं। मूल्य–आधारित शिक्षा को प्रभावी ढंग से लागू करने के लिए, शिक्षकों को नैतिक शिक्षा को सुगम बनाने के लिए आवश्यक कौशल, ज्ञान और दृष्टिकोण से लैस होना चाहिए। इसके लिए शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में नैतिकता, चिंतनशील अभ्यास और मूल्य–आधारित शिक्षण पद्धति को शामिल करना आवश्यक है। शिक्षकों की क्षमता को मजबूत करना नीतिगत उद्देश्यों को कक्षा की वास्तविकताओं में बदलने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा (राय एट अल., 2025)।

संस्थागत नवाचार नीतिगत प्रभावों का एक अन्य महत्वपूर्ण आयाम है। शैक्षणिक संस्थानों को लचीली और समावेशी प्रथाओं को अपनाना चाहिए जो नैतिक व्यवहार और सामाजिक जिम्मेदारी की संस्कृति को बढ़ावा दें। इसमें सह–पाठ्यक्रम और अतिरिक्त पाठ्यचर्या गतिविधियों को इस प्रकार डिजाइन करना शामिल है जो सामुदायिक सहभागिता, सामाजिक सेवा और सहयोगात्मक शिक्षा को प्रोत्साहित करती हैं। मूल्य–उन्मुख संस्थागत वातावरण का निर्माण नैतिक शिक्षा के सिद्धांतों को सुदृढ़ करेगा और छात्रों पर उनके प्रभाव को बढ़ाएगा।

इसके अलावा, एनईपी 2020 आधुनिक शिक्षा में धर्म जैसे स्वदेशी ज्ञान प्रणालियों और नैतिक ढाँचों के एकीकरण को प्रोत्साहित करता है। यह दृष्टिकोण न केवल सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करता है, बल्कि नैतिक विकास के लिए एक प्रासंगिक और उपयुक्त आधार भी प्रदान करता है। पारंपरिक ज्ञान को समकालीन शैक्षिक पद्धतियों के साथ मिलाकर, यह नीति मूल्य–आधारित शिक्षा के लिए एक संतुलित और समावेशी दृष्टिकोण को बढ़ावा देती है (इस्सर एट अल., 2024)।

नैतिक शिक्षा के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए मूल्यांकन पद्धतियों में नवाचार भी आवश्यक है। छात्रों की नैतिक समझ, व्यवहार और दृष्टिकोण का आकलन करने वाले वैकल्पिक तरीकों के साथ पारंपरिक मूल्यांकन विधियों को पूरक बनाने की आवश्यकता है। चिंतनशील जर्नल, पोर्टफोलियो और सहकर्मी मूल्यांकन जैसे उपकरण छात्रों के नैतिक विकास में अधिक व्यापक अंतर्दृष्टि प्रदान कर सकते हैं।

निष्कर्षतः, एनईपी 2020 भारत में नैतिक और चरित्र शिक्षा को आगे बढ़ाने के लिए व्यापक अवसर प्रस्तुत करता है। समग्र विकास, मूल्यों के एकीकरण और नवीन शिक्षण पद्धतियों पर इसका जोर शैक्षिक परिवर्तन के लिए एक मजबूत आधार तैयार करता है। नीतिगत निहितार्थों को संबोधित करके और नवीन प्रथाओं को अपनाकर, शिक्षा प्रणाली प्रभावी रूप से नैतिक रूप से सुदृढ़ व्यक्तियों का पोषण कर सकती है जो आधुनिक दुनिया की जटिलताओं को समझने और एक न्यायपूर्ण और मानवीय समाज के निर्माण में योगदान देने में सक्षम हों।

10. निष्कर्ष

(एनईपी) 2020 के ढांचे के भीतर नैतिक और चरित्र शिक्षा का यह वैचारिक विश्लेषण भारत में शिक्षा के दर्शन और व्यवहार में एक महत्वपूर्ण प्रतिमान परिवर्तन को उजागर करता है। वैचारिक समझ और दार्शनिक आधारों से लेकर शिक्षण पद्धतियों और कार्यान्वयन चुनौतियों तक विभिन्न आयामों पर हुई चर्चा से यह स्पष्ट होता है कि एनईपी 2020 नैतिक मूल्यों और चरित्र निर्माण को शैक्षिक प्रक्रिया के मूल में एकीकृत करने पर बल देती है। पहले के उन दृष्टिकोण ों के विपरीत, जो नैतिक शिक्षा को एक गौण घटक मानते थे, यह नीति इसे समग्र विकास के एक आवश्यक तत्व के रूप में स्थापित करती है, जिसका उद्देश्य बौद्धिक रूप से सक्षम और नैतिक रूप से सुदृढ़ व्यक्तियों का पोषण करना है। इस अध्ययन से उभरने वाली एक प्रमुख अंतर्दृष्टि यह है कि नैतिक और चरित्र शिक्षा स्वाभाविक रूप से बहुआयामी है, जिसमें मूल्य, नैतिकता, व्यवहार और दृष्टिकोण शामिल हैं। भारतीय ज्ञान परंपराओं और धर्म जैसे नैतिक ढांचों के साथ नीति का संरेखण एक सांस्कृतिक रूप से निहित लेकिन वैश्विक स्तर पर प्रासंगिक शिक्षा मॉडल बनाने के प्रयास को दर्शाता है। इसके अलावा, अनुभवात्मक अधिगम, चिंतनशील अभ्यासों और शिक्षार्थी–केंद्रित शिक्षणशास्त्र पर जोर देना अधिक सार्थक और परिवर्तनकारी शैक्षिक अनुभवों की ओर एक बदलाव का संकेत देता है। ये दृष्टिकोण शिक्षार्थियों को सक्रिय सहभागिता के माध्यम से मूल्यों को आत्मसात करने में सक्षम बनाते हैं, जिससे सैद्धांतिक ज्ञान और व्यावहारिक अनुप्रयोग के बीच की खाई को पाटा जा सकता है (परमार, 2026)।

विश्लेषण में एनईपी 2020 के दृष्टिकोण को वास्तविकता में बदलने में शिक्षकों और शैक्षणिक संस्थानों की महत्वपूर्ण भूमिका पर भी जोर दिया गया है। नैतिक शिक्षा के सूत्रधार के रूप में शिक्षक और मूल्यों के निर्माण के वातावरण के रूप में संस्थान, दोनों मिलकर शिक्षार्थियों के नैतिक दृष्टिकोण को आकार देने में योगदान करते हैं। साथ ही, संरचनात्मक सीमाओं, शिक्षकों की अपर्याप्त तैयारी और सामाजिक–सांस्कृतिक जटिलताओं जैसी चुनौतियों से नीति कार्यान्वयन, क्षमता निर्माण और संस्थागत सुधार में निरंतर प्रयासों की आवश्यकता उजागर होती है (कुमार, 2024)।

भविष्य की शिक्षा प्रणाली के संदर्भ में, एनईपी 2020 एक व्यापक और दूरदर्शी ढांचा प्रस्तुत करता है जो शिक्षा को सामाजिक उत्तरदायित्व, स्थिरता और मानव विकास के व्यापक लक्ष्यों के साथ जोड़ता है। समग्र विकास पर जोर देते हुए, यह नीति शिक्षार्थियों को तेजी से बदलती दुनिया की जटिलताओं से निपटने और एक मजबूत नैतिक दिशा–निर्देश बनाए रखने के लिए तैयार करती है। मूल्य–आधारित शिक्षा का एकीकरण नैतिक दुविधाओं, सामाजिक विखंडन और मूल्यों के क्षरण जैसे समकालीन मुद्दों को संबोधित करने में विशेष रूप से महत्वपूर्ण है, जिससे अधिक न्यायपूर्ण और सामंजस्यपूर्ण समाज के विकास में योगदान मिलता है (श्रीकला और कुमार, 2024)।

इसके अलावा, बहुविषयक शिक्षा, जीवन कौशल और नैतिक तर्क पर ध्यान केंद्रित करने से यह सुनिश्चित होता है कि शिक्षा व्यक्तिगत और सामाजिक दोनों आवश्यकताओं के लिए प्रासंगिक बनी रहे। आधुनिक शैक्षिक पद्धतियों के साथ भारतीय ज्ञान प्रणालियों का समावेश एक संतुलित दृष्टिकोण प्रदान करता है जो नवाचार को अपनाते हुए सांस्कृतिक विरासत का सम्मान करता है। हाल के अध्ययनों से प्राप्त अनुभवजन्य अंतर्दृष्टि यह भी दर्शाती है कि एनईपी 2020 के कार्यान्वयन में छात्रों के समग्र विकास, जिसमें उनका नैतिक और सामाजिक विकास शामिल है, को सकारात्मक रूप से प्रभावित करने की क्षमता है (मोंडल एट अल., 2024)।

निष्कर्षतः, एनईपी 2020 के माध्यम से नैतिक और चरित्र शिक्षा का पुनरीक्षण भारत में शिक्षा के उद्देश्य को पुनर्परिभाषित करने की इसकी परिवर्तनकारी क्षमता को दर्शाता है। नैतिक मूल्यों को अकादमिक शिक्षा के साथ एकीकृत करके, यह नीति एक ऐसी शिक्षा प्रणाली की नींव रखती है जो न केवल ज्ञान प्रदान करती है बल्कि जिम्मेदार, सहानुभूतिपूर्ण और मूल्य–प्रेरित व्यक्तियों का निर्माण भी करती है। इस दृष्टिकोण की सफल प्राप्ति नीति निर्माताओं, शिक्षकों, संस्थानों और समग्र रूप से समाज के सहयोगात्मक प्रयासों पर निर्भर करेगी, जिससे यह सुनिश्चित हो सके कि शिक्षा व्यक्तिगत विकास और सामाजिक प्रगति दोनों के लिए एक शक्तिशाली साधन के रूप में कार्य करे।

संदर्भ

1. पाधी, एस., और बनर्जी, ए. (2023, मई)। एनईपी 2020 में परिलक्षित शिक्षा में नैतिकता।
2. पारेख, के., और पारेख, के. (2025)। मूल्यों के माध्यम से शिक्षा में सुधाररू भारत में नैतिक और मानवतावादी शिक्षा को आकार देने में एनईपी 2020 की भूमिका। इंटरनेशनल जर्नल फॉर मल्टीडिसिप्लिनरी रिसर्च (आईजेएफएमआर), 7(6)।
3. परमार, आर. जी. (2026). एनईपी 2020 के माध्यम से समग्र शिक्षारू बहुविषयक शिक्षा में भारतीय ज्ञान प्रणालियों का एकीकरण। यूकेआर जर्नल ऑफ एजुकेशन एंड लिटरेचर, 2(1)। https://doi.org/10.5281/zenodo.18466845
4. सोनी, ए., और बंसल, एन. (2025). प्राथमिक शिक्षा की पुनर्कल्पनारू एनईपी 2020 के तहत मूल्य–आधारित शिक्षा के लिए कथात्मक शिक्षाशास्त्र। शोध सारीरू एक अंतर्राष्ट्रीय बहुविषयक पत्रिका, 4(4)।
5. गिरी, के. बी. (2025). एनईपी–2020 के आलोक में मूल्य शिक्षा और नैतिक विकास। जर्नल ऑफ रिसर्च एंड डेवलपमेंट, 17(11 III), 172–174।
6. मिश्रा, आर. जे., और पनी, एस. (2025, नवंबर)। भारत में शिक्षा की पुनर्परिभाषारू समग्र विकास, चरित्र और योग्यता के लिए उत्प्रेरक के रूप में एनईपी 2020।
7. बर्मन, एम. (2025, मई)। एनईपी 2020 के संदर्भ में मूल्य शिक्षा का महत्व। https://doi.org/10.5281/zenodo.15390987
8. इस्सर, एस.एस., राज, एन., तोमर, एम., और शर्मा मारव्हा, एस. (2024). एनईपी 2020 में मूल्य–आधारित शिक्षारू धर्म के माध्यम से नैतिक और चारित्रिक विकास को बढ़ावा देना। एशियन एजुकेशन एंड डेवलपमेंट स्टडीज, 13(5)। https://doi.org/10.1108/AEDS–06–2024–0121
9. श्रीवास्तव, पी. (2025). एनईपी–2020 का एक आलोचनात्मक सैद्धांतिक अध्ययन। नवीन इंटरनेशनल जर्नल ऑफ मल्टीडिसिप्लिनरी साइंसेज, 2(1), 40–51। https://doi.org/10.71126/nijms.v2i1.87
10. यादव, यू.ए., गेलानी, वी., और कुनबी, एस. (2025, जून)। भारतीय शिक्षा में मूल्यांकन में क्रांतिरू एनईपी 2020 परीक्षा सुधारों और पारंपरिक मूल्यांकन प्रणालियों का तुलनात्मक विश्लेषण। भारतीय शिक्षा में मूल्यांकन में क्रांति लाना (पृष्ठ 103–119)। गेह प्रेस यूएसए।
11. राय, एस. के., पल्लवी, के., और सिंह, एन. (2025)। मूल्य–आधारित शिक्षा के लिए एनईपी 2020 के निहितार्थ। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एडवांस्ड मास कम्युनिकेशन एंड जर्नलिज्म, 6(1), 57–63। https://doi.org/10.22271/27084450.2025.v6.i1.99
12. चन्नावर, एस. (2023, फरवरी)। समग्र विकास के लिए वैचारिक ढांचारू एनईपी 2020।
13. मोंडल, डी. के., गोराई, पी., और सेनगुप्ता, डी. (2024)। समग्र विकास पर एनईपी 2020 के प्रभाव का आकलनरू बिधान चंद्र कॉलेज के वाणिज्य स्नातक छात्रों का एक केस स्टडी। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ क्रिएटिव रिसर्च थॉट्स, 12(6)।
14. कुरियन, ए., और चंद्रमना, एस. बी. (2020, नवंबर)। उच्च शिक्षा पर नई शिक्षा नीति 2020 का प्रभाव। आत्मनिर्भर भारतरू आत्मनिर्भर भारत की ओर एक रोडमैप। https://doi.org/10.6084/m9.figshare.13332413.v1
15. मेहता, पी., और प्रजापति, ए. बी. (2025)। गांधीवादी शैक्षिक दर्शन और एनईपी 2020रू एक तुलनात्मक विश्लेषण। गैप ज्ञानरू सामाजिक विज्ञान की एक वैश्विक पत्रिका, 8(2), 54–70।
16. श्रीकला, के., और कुमार, एस. डी. (2024)। एनईपी–2020 के कार्यान्वयन के माध्यम से समग्र विकास। रिसर्च रिव्यू इंटरनेशनल जर्नल ऑफ मल्टीडिसिप्लिनरी, 9(5), 50–55। https://doi.org/10.31305/rrijm.2024.v09.n05.007
17. बर्मन, टी. (2021). एनईपी 2020 के दौरान और उससे पहले शिक्षक शिक्षारू भारतीय परिप्रेक्ष्य। एबीएस बुक्स।
18. कुमार, ए. (2024). एनईपी 2020 के विजन के संदर्भ में शिक्षक शिक्षा का रूपांतरण। स्कॉलरली रिसर्च जर्नल फॉर ह्यूमैनिटी साइंस एंड इंग्लिश लैंग्वेज, 12(61), 116–122। https://doi.org/10.5281/zenodo.10678024
19. खातून, एस. (2025). एनईपी–2020 के संदर्भ में कौशल–आधारित शिक्षारू एक शोध परिप्रेक्ष्य। एजुकेशनल क्वेस्टरू एन इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशन एंड एप्लाइड सोशल साइंसेज, 16(1)। https://doi.org/10.30954/2230–7311.1.2025.11
20. वर्मा, एच., और कुमार, ए. (2021). भारत की नई शिक्षा नीति 2020: एक सैद्धांतिक विश्लेषण। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ बिजनेस एंड मैनेजमेंट रिसर्च, 9(3), 302–306. https://doi.org/10.37391/IJBMR.090308